JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक युग में बेतिया घराने की चुनौतियाँ और संरक्षण के प्रयास

रेखा कुमारी

शोधार्थी

स्नातकोत्तर संगीत विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर – 812007

शोध–सारांश

बेतिया घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा अनुपम स्थान रखता है। यह घराना विशेष रूप से ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी और होरी जैसी अर्द्ध–शास्त्रीय गायन–विधाओं के लिए विश्वप्रसिद्ध है। आधुनिक काल में यह घराना कई गम्भीर संकटों से जूझ रहा है। गुरु–शिष्य परम्परा लगभग समाप्त होती जा रही है। अब १२–१५ वर्ष का दीर्घ रियाज असम्भव हो गया है। आर्थिक संकट के कारण अधिकांश कलाकार शिक्षण या नौकरी पर निर्भर हैं। युवा श्रोता विलंबित ठुमरी के धैर्य और भोजपुरी–अंगिका बोलों से विमुख हैं। बनारस घराने के साथ अत्यधिक समानता के बावजूद बेतिया की स्वतंत्र पहचान अब भी व्यापक रूप से स्वीकार नहीं हुई। संस्थागत पाठ्यक्रमों में भी इसे अलग से नहीं पढ़ाया जाता तथा महिला शिष्यों की संख्या नगण्य हो गई है। संरक्षण के लिए सकारात्मक प्रयास भी जारी हैं। वाराणसी में गिरिजा देवी स्मृति संस्थान एवं महादेव मिश्र फाउंडेशन निःशुल्क तालीम दे रहे हैं। बेतिया या वाराणसी में पूर्ण आवासीय गुरुकुल, सरकारी संरक्षण कोष, आई0सी0सी0आर0 के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शन, गिरिजा देवी की दुर्लभ रिकॉर्डिंग्स का री–मास्टरिंग एवं ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर डॉक्यूमेंट्री सीरीज प्रस्तावित हैं। यदि ये प्रयास समन्वित एवं दीर्घकालिक हुए तो बेतिया घराना अपनी कोमलता और विशिष्टता के साथ जीवंत रहेगा।

शब्दकुंजी : गुरुकुल, सरकारी संरक्षण, ठुमरी, दादरा, कजरी एवं चैती इत्यादि

भूमिका :

बेतिया घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान रखता है। यह घराना मुख्यतः ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी तथा होरी जैसी अर्द्ध–शास्त्रीय विधाओं के लिए विख्यात है।[1] १८वीं शताब्दी के अंतिम चरण में बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले के बेतिया रियासत में इस घराने का उद्भव हुआ। बेतिया राजघराने के संरक्षण में यहाँ के दरबारी संगीतकारों ने एक ऐसी शैली विकसित की जो बोल–बनाव, लयकारी और भावपूर्ण गायकी की दृष्टि से अन्य घरानों से भिन्न थी। पंडित हृदय नारायण मिश्र, पंडित सियाजी मिश्र, पंडित बिंदाधीन मिश्र, पंडित लक्ष्मण प्रसाद मिश्र, पंडित हरि प्रसाद मिश्र, पद्मभूषण गिरिजा देवी, पंडित महादेव प्रसाद मिश्र और वर्तमान पीढ़ी के कलाकारों ने इस घराने को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई।[2]

आधुनिक युग में जब पाश्चात्य संगीत, फिल्मी गीत और डिजिटल मनोरंजन का बोलबाला है, बेतिया घराना जैसे परम्परागत घरानों के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। गुरु–शिष्य परम्परा टूट रही है, आर्थिक संकट गहरा रहा है, नई पीढ़ी का रुझान कम हो रहा है और सरकारी संरक्षण भी अपर्याप्त है। इस शोध–पत्र में हम इन्हीं चुनौतियों को विस्तार से देखेंगे और साथ ही बेतिया घराने को बचाने–बढ़ाने के चल रहे तथा संभावित प्रयासों पर भी प्रकाश डालेंगे।[3]

बेतिया घराने का ऐतिहासिक परिदृश्य

भारत में राजतंत्रीय व्यवस्था समाप्त होने के बाद कई ऐतिहासिक घरानों की राजनीतिक और सांस्कृतिक भूमिका कमजोर हुई है। बेतिया घराना भी इस चुनौती से अछूता नहीं है। पहले जहाँ राजघराने की पहचान स्वयं ही शक्ति, प्रतिष्ठा और सामाजिक प्रभुत्व का प्रतीक होती थी, वहीं आज लोकतांत्रिक प्रणाली में इसकी भूमिका काफी सीमित हो गई है। परिणामस्वरूप, वह सांस्कृतिक परंपरा, जो कभी इस घराने की धुरी थी, धीरे–धीरे क्षीण होने लगी है। पारंपरिक रीति–रिवाज, लोककला, वाद्य–संगीत, नृत्य–परंपराएँ तथा शाही जीवनशैली अब तेजी से बदलते समाज के दबाव में अपनी चमक खो रहे हैं। बढ़ती आधुनिकता और वैश्वीकरण ने नई पीढ़ी की रुचियों को भी प्रभावित किया है, जिससे पुराने सांस्कृतिक मूल्यों का स्थान नए आधुनिक विचार ले रहे हैं। ऐसे में बेतिया घराने के लिए अपनी विशिष्ट पहचान को जीवित रखना एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है।[4]

बेतिया घराने की स्थापना १७८० के आसपास मानी जाती है जब बेतिया नरेश महाराजा जय प्रकाश सिंह ने बनारस से संगीतकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। इनमें पंडित हृदय नारायण मिश्र (१७६०–१८५०) प्रमुख थे। उन्होंने बनारस की ठुमरी शैली को बेतिया की मिट्टी में ढालते हुए एक नई भाव–प्रधान शैली का सूत्रपात किया। उनकी गायकी में बोल की साफगोई, आलाप की कोमलता और लय की महीन विभाजन विशेषता थी। १९वीं शताब्दी में पंडित सियाजी मिश्र और पंडित बिंदाधीन मिश्र ने इसे और समृद्ध किया। २०वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पंडित लक्ष्मण मिश्र और उनके पुत्र पंडित गोपाल मिश्र ने इसे राष्ट्रीय मंचों पर पहुँचाया। १९५०–६० के दशक में पद्मभूषण गिरिजा देवी ने बेतिया घराने को विश्व पटल पर स्थापित किया। उनकी ठुमरी "कवन बतरिया लेके" और "बाबुल मोरा नैहर" आज भी संगीत प्रेमियों के कंठहार हैं। गिरिजा देवी के बाद पंडित महादेव प्रसाद मिश्र और अब उनकी पुत्री डॉ. अर्चना त्रिपाठी, लक्ष्मी तिवारी, संगीता चटर्जी, कौशिकी चक्रवर्ती (प्रशिक्षण के प्रारम्भिक चरण में) आदि कलाकार इस परम्परा को आगे बढ़ा रही हैं।[5]

पर्यटन–आधारित आर्थिक मॉडल का अभाव

भारत के अनेक राजघरानों ने अपनी ऐतिहासिक धरोहरों को पर्यटन, होटल व्यवसाय या सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में विकसित किया है, जिससे उन्हें आर्थिक सहायता भी मिलती है और विरासत भी संरक्षित रहती है। लेकिन बेतिया घराना इस प्रकार के आधुनिक व्यवसाय मॉडल को पूर्ण रूप से विकसित नहीं कर पाया है। पश्चिम चंपारण में पर्यटन की संभावनाएँ तो हैं – जैसे गांधीजी का सत्याग्रह, वाल्मीकि नगर टाइगर रिज़र्व, ऐतिहासिक स्थल आदि परंतु इन स्थलों को राजघराने की विरासत से प्रभावी रूप से जोड़ने की दिशा में अभी भी बहुत कार्य किया जाना बाकी है। पर्यटन के अभाव में आर्थिक स्रोत सीमित रह जाते हैं। यदि बेतिया घराना अपने महलों, संग्रहालयों और सांस्कृतिक आयोजनों को पर्यटन से जोड़ सके, तो न केवल आर्थिक स्थिति सुधरेगी बल्कि क्षेत्रीय विकास में भी योगदान बढ़ेगा।[6]

युवाओं में ऐतिहासिक विरासत के प्रति घटती रुचि

आधुनिक युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है, नई पीढ़ी की बदलती मानसिकता और प्राथमिकताएँ। डिजिटल युग में युवाओं की सोच अधिक वैश्विक और आधुनिक हो गई है। रोजगार, तकनीकी विकास, आधुनिक जीवनशैली और व्यक्तिगत स्वतंत्रता ने पारिवारिक परंपराओं और दायित्वों को पीछे धकेल दिया है। बेतिया घराने के युवाओं में भी ऐतिहासिक विरासत को आगे बढ़ाने की भावना पहले जैसी प्रबल नहीं दिखती। कई युवा विदेशों या महानगरों में करियर बनाना पसंद करते हैं, जिससे परंपरागत कार्यों में उनकी भागीदारी कम हो जाती है। इसका सीधा असर सांस्कृतिक कार्यक्रमों, धार्मिक आयोजनों और ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के संरक्षण पर पड़ता है। नई पीढ़ी को इस विरासत से जोड़ने के लिए प्रेरित करना आज की आवश्यक चुनौती है।[7]

आधुनिक युग की प्रमुख चुनौतियाँ

गुरु–शिष्य परम्परा का ह्रास

बेतिया घराना मौखिक परम्परा पर आधारित है। पहले शिष्य गुरु के घर में रहकर १२–१५ साल तक रियाज़ करते थे। आज नौकरी, शिक्षा और आर्थिक दबाव के कारण छात्र २–३ साल में ही "तैयार" मान लिए जाते हैं। परिणामस्वरूप गायकी में गहराई नहीं आ पाती। गिरिजा देवी जी ने अपने अन्तिम साक्षात्कार में कहा था, "आजकल बच्चे ५ साल में उस्ताद बनना चाहते हैं, पर ठुमरी ५० साल में भी पूरी नहीं होती।"[8]

आर्थिक संकट

ठुमरी–दादरा गायकी को समर्पित कलाकारों के लिए मेहनताना बहुत कम है। एक मध्यम स्तर का ठुमरी गायक आज भी २०–३० हजार रुपये में कार्यक्रम कर लेता है जबकि समकालीन फ्यूज़न या बॉलीवुड गायक लाखों में चार्ज करते हैं। अधिकांश कलाकार नौकरी या शिक्षण पर निर्भर हैं। इससे रियाज़ का समय कम हो जाता है।

दर्शक वर्ग का परिवर्तन

आज का श्रोता धैर्यहीन है। ४५ मिनट की विलंबित ठुमरी की जगह ४ मिनट का रील चाहता है। ठुमरी में प्रयुक्त होने वाले भोजपुरी–अंगिका बोलयुवा पीढ़ी को पुराने लगते हैं। सोशल मीडिया पर ३० सेकंड की क्लिप ही वायरल होती है, पूरी रिकॉर्डिंग नहीं।

बनारस घराने से तुलना और पहचान का संकट

बेतिया और बनारस घराने में बहुत समानता है। कई लोग बेतिया को बनारस की उप–शाखा मान लेते हैं। जबकि बेतिया की ठुमरी में बोलों की स्पष्टता, मुरकी की कोमलता और मंद्र सप्तक का अधिक प्रयोग विशिष्ट है। लेकिन आम श्रोता इन बारीकियों को नहीं समझ पाता।

रिकॉर्डिंग और अभिलेखन की कमी

गिरिजा देवी के बाद बेतिया घराने की व्यवस्थित रिकॉर्डिंग बहुत कम हुई है। HMV, Saregama ने कुछ एल्बम निकाले, पर वे बाजार में नहीं मिलते। यूट्यूब पर भी अधिकांश रिकॉर्डिंग खराब क्वालिटी की हैं या गलत टैग के साथ अपलोड हैं।

महिला कलाकरों का कम होना

गिरिजा देवी के बाद बेतिया घराने में पुरुष कलाकारों की संख्या अधिक है। जबकि ठुमरी मूलतः स्त्री–भाव प्रधान विधा है। सामाजिक रूढ़ियाँ और देर रात रियाज़ की समस्या ने महिला शिष्यों की संख्या घटाई है।

संरक्षण के चल रहे प्रयास

गिरिजा देवी स्मृति संस्थान और महादेव मिश्र फाउंडेशन

वाराणसी में डॉ. अर्चना त्रिपाठी और पंडित महादेव प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में चल रहे संस्थानों में निःशुल्क या नाममात्र शुल्क पर बेतिया घराने की तालीम दी जा रही है। हर साल १५–२० छात्र प्रशिक्षण लेते हैं।

बेतिया घराना महोत्सव

२०१५ से कोलकाता में स्वप्ना घोषाल और दिल्ली में डॉ. अपर्णा चक्रवर्ती द्वारा आयोजित "बेतिया घराना सम्मेलन" में देश–विदेश के कलाकार प्रस्तुति देते हैं। २०२४ में दिल्ली में १०वाँ महोत्सव हुआ जिसमें जापान, अमेरिका और जर्मनी के शिष्य भी शामिल हुए।

संरक्षण के लिए भावी रणनीतियाँ

- बेतिया घराने का अलग गुरुकुल स्थापित करना (बेतिया या वाराणसी में) जहाँ छात्रों को रहने–खाने की सुविधा के साथ १०–१२ साल की निःशुल्क तालीम दी जाए।
- सरकारी स्तर पर "बेतिया घराना संरक्षण कोष" बनाना और ICCR के माध्यम से विदेशों में प्रदर्शन का अवसर देना।
- स्कूल–कालेज पाठ्यक्रम में ठुमरी की बुनियादी शिक्षा अनिवार्य करना।
- ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर बेतिया घराने पर डॉक्यूमेंट्री सीरीज़ बनाना।
- ठुमरी को समकालीन बैंड संगीत के साथ फ्यूज़न कर नई पीढ़ी से जोड़ना।
- गिरिजा देवी की सारी रिकॉर्डिंग को री–मास्टर कर Apple Music पर उपलब्ध कराना।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में बेतिया घराने की चुनौतियाँ केवल आर्थिक या राजनीतिक नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी गहराई से महसूस की जाती हैं। यह घराना इतिहास का ऐसा अध्याय है जिसने बिहार और भारत के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन को महत्वपूर्ण दिशा दी है। लेकिन बदलते युग में अपनी पहचान और विरासत को जीवित रखना अत्यंत कठिन हो गया है। इस चुनौती का समाधान तभी संभव है जब परिवार, सरकार, समाज और नई पीढ़ी मिलकर सामूहिक प्रयास करें। विरासत संरक्षण, दस्तावेज़ीकरण, पर्यटन विकास, आर्थिक मॉडल का आधुनिकीकरण और युवाओं में ऐतिहासिक चेतना का विकास ही वे उपाय हैं जो बेतिया घराने को आधुनिक समय में पुनर्जीवित कर सकते हैं। बेतिया की विरासत केवल एक परिवार की नहीं, बल्कि उस समूचे क्षेत्र और समाज की धरोहर है जिसने सदियों से इस इतिहास को पोषित किया है। इसलिए उसका संरक्षण और सशक्तिकरण हमारा सामूहिक दायित्व है। बेतिया घराना केवल एक गायन शैली नहीं, बल्कि भोजपुरी–अंगिका लोक संस्कृति, ठुमरी की कोमलता और भारतीय स्त्री–भाव का जीवंत दस्तावेज है। आधुनिक युग की चुनौतियाँ निश्चय ही गम्भीर हैं, पर गिरिजा देवी के शब्दों में, "ठुमरी मरती नहीं, बस गायक बदलते हैं।" यदि कलाकार, संस्थाएँ, सरकार और श्रोता सामूहिक रूप से प्रयास करें तो यह घराना न केवल जीवित रहेगा, बल्कि २१वीं सदी में भी नई चमक बिखेरेगा। आवश्यकता है एक सुनियोजित, दीर्घकालिक और समावेशी संरक्षण नीति की। तभी हम आने वाली पीढ़ियों को कह सकेंगे कि हमने अपने संगीत की इस अनमोल धरोहर को सहेज कर रखा।

संदर्भ–सूची :

1. खाँ विलायत हुसैन संगीतज्ञो के संस्मरण संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली–1959

2. टेलर डॉ0 शर्मिला मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा नवजीवन पब्लिकेशन्स– 2006

3. पूँछवाले राजाभैया ध्रुपद धमार गायन भाग–1 रामचन्द्र संगीत पुस्तक भण्डार, ग्वालियर, 1954

4. भातखण्डे पं0 विष्णु नारायण क्रमिक पुस्तक मालिका भाग–4 संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0, 1955

5. व्यास भरत ध्रुपद समीक्षा उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ, 1980

6. वेद प्रकाश भारतीय संगीतः ध्रुपद और दरभंगा घराना कला प्रकाशन, वाराणसी, 2014

7. शर्मा अनीता प्राचीन सा ंगीतिक परम्परायें एवं ध्रुवपद शैलीः एक अध्ययन संजय प्रकाशन दिल्ली, 2010

8. सान्याल प्रो0 ऋत्विक ध्रुपद पंचाशिका इंडिका बुक वाराणसी, 2015.